

विषयक्रमः

नागार्जुनबुधवर्यैर्लिखितस्यास्य सुहल्लेखस्य ।

* सूचीयं विषयाणां ज्ञेया पृष्ठाङ्काहिताऽत्र ॥

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
पुरोवाक् - प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी	iii
Preface (प्राक्कथन)	v
<i>Nāgārjuna: A Brief Biography</i> (नागार्जुनः एक संक्षिप्त जीवनी)	vi-xxix
Introduction to The <i>Suhrillekha</i> सुहल्लेखस्य भूमिका (सुहल्लेख का परिचय)	xxx-xlvii
1. Encouragement to Listen to the Teachings रचनायाः प्रयोजनम् (रचना का प्रयोजन)	2 3
2. Faith (<i>Śraddhā</i>) is necessary अत्र श्रद्धा विधेया (इसमें श्रद्धा आवश्यक है)	4 5
3. Emphasis on Teachings रचनायां प्रामाण्यम् (रचना में प्रमाण)	6 7
4. The Six Remembrances बुद्धोपदिष्टाः षडनुस्मृतयः (बुद्धोक्त छह अनुस्मृतियाँ)	8 9
5. Ten Precepts दशकुशलकर्मसेवनम् (दस कुशल कर्मों का अभ्यास)	10 11
6. Practising Liberality दानपारमिता (दान पारमिता)	12 13
7. Practising Morality शीलपारमिता (शील पारमिता)	14 15
8. Six <i>Pāramitās</i> (Six Perfections) षट् पारमिताः (छह पारमिताएँ)	16 17
9. Respecting One's Father and Mother मातृ-पितृपूजा (माता-पिता की सेवा)	18 19

10. Practising the Ten Śīla	20
दश शीलान्यनुपालनीयानि (दस शीलों का पालन)	20
11. Highlighting Upasatha	21
शीलानुपालनमाहात्म्यम् (शील-आचरण का माहात्म्य)	22
12. Eschewing Wrong Attitudes	23
मात्सर्यादिषु शत्रुभावः (मात्सर्य आदि में शत्रुता की भावना)	24
13. Practising Mindfulness	25
अप्रमादोऽमृतपदम् (अप्रमाद ही अमृत है)	26
14. Highlighting Mindfulness	27
अप्रमाद माहात्म्यवर्णनम् (अप्रमाद का माहात्म्य)	28
15. Practising Endurance	29
क्षान्तिपारमिता (क्षान्तिपारमिता)	30
16. Eschewing Indecent Conduct	31
वैरपरित्यागः (वैर का त्याग)	32
17. Three types of Mind	33
चित्तस्य त्रैविध्यम् (तीन प्रकार के चित्त)	34
18. Three types of Speaker	35
प्रवक्तृणां त्रैविध्यम् (तीन प्रकार के वक्ता)	36
19. Four types of Human Beings	37
चत्वारः पुद्गलाः (चार प्रकार के मनुष्य)	38
20. Finding Proper Associates	39
तत्रास्त्याम्रफलोपमा (आम्रफल का दृष्टान्त)	40
21. Eschewing Desire for Another's Wife	41
परस्त्रीदर्शनं हेयम् (परस्त्री-दर्शन का निषेध)	42
22. Controlling the Mind Necessary	43
कर्तव्यश्चित्तनिग्रहः (चित्त का दमन आवश्यक)	44
23. Eschewing Worldly Desires	45
प्रहेया भववासनाः (भव-वासनाएँ त्याज्य)	46
24. Praise for Practitioner	47
योगयुक्तस्य प्राशस्त्यम् (योगी की प्रशंसा)	48
	49

25. Contemplating the Faults of the Desired Object and the Desiring Mind	50
सत्कायदृष्टिर्गर्हणम् (सत्काय दृष्टि की निन्दा)	51
26. The Eschewal of The Seeds of Desire	52
कामतृष्णापरित्यागः (कामतृष्णा का परित्याग)	53
27. To Uproot the Causes of Attachment	54
योनिशो मनस्कारः (मनोयोगपूर्वक समीक्षा करना)	55
28. In Praise of Wisdom and Morality	56
प्रज्ञा-शीलविहीनो न सत्करणीयः (प्रज्ञा-शीलविहीन का सत्कार नहीं)	57
29. Turning Back from Worldly <i>Dharmas</i>	58
लोकधर्मान् परित्यज्य समदर्शी भवेद् (लोकधर्मों का प्रहाण)	59
30. Restrain from Evil even for Meritorious Deeds	60
प्रजानां हितायापि पापमकरणीयम् (लोगों के हित के लिए भी पाप अकरणीय)	61
31. Results of Evil Deeds	62
पापकर्मविपाकः (पाप कर्म का फल)	63
32. To Acquire the Wealth of the Holy Ones	64
आर्यधनानि सप्त (सात आर्यधन)	65
33. Eschewing Hindrances to the Riches of the <i>Āryas</i>	66
षड् दुर्गतयस्त्याज्याः (त्यागने योग्य छह दुर्गतियाँ)	67
34. Abiding in a State of Satisfaction	68
सन्तोषः परमं धनम् (सन्तोष ही श्रेष्ठ धन है)	69
35. Accumulating Excess Wealth Brings Misery	70
धनाधिक्येन दुःखम् (धन की अधिकता से दुःख)	71
36. Avoidable Three types of Wives	72
त्रिविधाः पत्न्यस्त्याज्याः (परिहरणीय त्रिविध पत्नियाँ)	73
37. To Know the Qualities of a Prospective Wife	74
सत्कार्यास्त्रिविधाः पत्न्यः (त्रिविध पत्नियाँ पूजनीय)	75
38. Regulating the Quantity of One's Food	76
भोजनं शरीरस्थितिमात्रार्थम् (शरीर-रक्षामात्र के लिए भोजन)	77

39. To Strive without Sleeping
क्षेमङ्करः स्वल्पस्वापः (अल्प निद्रा हितकर) 78
40. Meditating Upon the Four Immeasurables
चत्वारो ब्रह्मविहारः (चार ब्रह्मविहार) 79
41. To Practise the Four Concentrations
चत्वारि ध्यानानि तेषां माहात्म्यम् च (चार ध्यान व उनकी महिमा) 80
42. The Relative Gravity of Karma
प्रयत्नं कुशलाचारे (कुशल आचरण का प्रयत्न करना चाहिए) 81
43. Example of Gangā River Water
तत्र गङ्गाजलनिदर्शनम् (गंगाजल का दृष्टान्त) 82
44. To Abandon the Five Obstructions
प्रहेयाणि पञ्च नीवरणानि (पाँच नीवरणों का परित्याग) 83
45. Pursuance of Supreme Beatitude
धर्माग्रा यत्नेनाभ्यसनीयाः (धर्माग्रों का यत्नपूर्वक अभ्यास) 84
46. Abandon Pride to Attain the Five Powers
तदभ्यासोपायः (उनके अभ्यास का उपाय) 85
47. To Meditate in A Way Conducive to the Right View
सम्यग्दृष्ट्या निर्वाणम् (सम्यग्दृष्टि से निर्वाणप्राप्ति) 86
48. To Meditate on the Four Foundations of Mindfulness
मिथ्यादृष्ट्या दुर्विपाकः (मिथ्यादृष्टि का कुफल) 87
49. Recollecting Selflessness
चतस्रो विपर्यय-दृष्टयः (चार विपर्यय-दृष्टियाँ) 88
50. Ignorance and Desire Responsible for World
तृष्णाविद्ये जगत्सृष्टौ कारणम् (जगत्सृष्टि में तृष्णा और अविद्या हेतु) 89
51. Eschewing the Three Bonds (Obstacles for Liberation)
त्रीणि संयोजनानि (तीन संयोजन) 100
52. Practising of Four Ārya Truths
ध्येयं आर्यसत्यचतुष्टयम् (चार आर्यसत्यों का अभ्यास) 101
53. Always Practise the Three Trainings
तिस्रः शिक्षाः सदाऽभ्यस्याः (तीन शिक्षाओं का सदैव अभ्यास) 102

54. Recollecting Bodily Circumstances	108
निर्वाणाय मतिस्ते चेद् धाव्या कायगता स्मृतिः (कायगत स्मृति निर्वाण में सहायक)	109
55. Removal of Attachment for the Body	110
जीवनं वायुवच्चलम् (वायु की गति तुल्य चञ्चल जीवन)	111
56. Body Becomes Ashes Through Burning	112
धस्मान्तानि शरीराणि (मनुष्य-शरीर अन्त में जल जाता है)	113
57. Impermanence of Life	114
शरीरस्याऽस्य का कथा (इस शरीर के विषय में क्या कहें)	115
58. Even World is Impermanent	116
कदलीदलनिभं भवे गमनागमनम् (संसार में आवागमन कैले के पंख के समान)	117
59. Contemplation on the Difficulty of Attaining A Life of Opportunity and Fortune	118
कच्छपनिदर्शनेन मानवं जन्म दुर्लभम् (कच्छप के दृष्टान्त से मानव जीवन की दुर्लभता)	119
60. Example for Misuse of Human Life	120
तत्रौपम्यम् (मानवजीवन के दुरुपयोग की उपमा)	121
61. Council to Exert To Achieve An Extraordinarily Good Foundation	122
अनुकूलसाधनायां सहायकं महाचक्रचतुष्टयम् (अनुकूल साधना में सहायक चार महाचक्र)	123
62. Guidance of Kalyāṇamitra in Spiritual Practice	124
कल्याणमित्रसङ्गो ब्रह्मचर्यपूरकः (धर्मसाधना में कल्याणमित्र की सहायता)	125
63. Eight Faulty States	126
अष्टावक्षणाः (आठ अक्षण, प्रतिकूल अवसर)	127
64. Defects of Inopportunity	128
क्षणसम्पत्त्यै प्रयतनीयम् येन पुनर्भवो न स्यात् (पुनर्भवनिवृत्ति के लिए क्षणसम्पत्ति)	129

65. To Produce Revulsion For *Samsāra*
पुनर्धवे दोषाः (पुनर्जन्म के दोष) 130
66. The Defect of being Without Certainty 130
सांसारिकसम्बन्धे पुनर्जन्मैव हेतुः (सांसारिक सम्बन्ध पुनर्जन्म का हेतु) 131
67. The Defect of Never Becoming Satisfied 132
अहो मूढस्य मूढता (मूर्ख की मूर्खता) 133
68. The Defect of Discarding One's Body & Being
Conceived Again and Again 134
कथं स्यात् मातृगणना (माताओं की गणना कैसे हो) 135
69. The Defect of Continually Vacillating between
Eminent and Lowly States 136
ऐन्द्र पदमवाप्यापि अन्ते मर्त्यलोकगतिर्ध्रुवा 137
(इन्द्र पद से अन्त में मृत्युलोक में गिरना) 138
70. Unreliability of Sense Pleasures 139
क्षीणे पुण्ये मृत्युलोके प्रवेशः (पुण्य क्षीण होने पर मृत्युलोक में आना) 140
71. Unreliability of Pleasures Derived from One's Habitat 141
सुमेरावुषित्वाप्यन्ते निरयपातः (सुमेरु पर्वतवास के अन्त में 142
भी नरक में पतन)
72. Different Sufferings of Hell 143
विविधा नरकयातनाः (विविध नरक यातनाएं) 144
73. Some More Sufferings of Hell 145
निरये अन्यतराः यातनाः (नरक में और भी यातनाएं) 146
74. Fall from Higher Realms to Lower Realms 147
ब्रह्मकायिकदेवलोकसुखभोगानन्तरमवीचिपातः (ब्रह्मलोक से 148
नरक में पतन) 149
75. Fall From Sun-Moon Realm to the Darkness 150
सूर्य-चन्द्रपदं प्राप्यन्तेऽन्धकारपातः (सूर्य-चन्द्र लोक से गिर 151
कर अन्धकार में पतन)

76. The Defects of Being Companionless	152
मृत्युमेव विनिश्चित्य पुण्यदीपं प्रकाशय (मृत्युविजय के लिए पुण्यदीप)	153
77. The Suffering of the Hells	154
रौरव नरकं यान्ति प्राणिनो ये कुमार्गगाः (कुमार्गियों का रौरवपात)	155
78. Some More Sufferings of Hells	156
तत्र विविधदुःखवेदनानामनुभवः (विविध दुःख वेदनाएँ)	157
79. Force To Drink Hot Iron	158
तप्तलौहद्रवपानम् (गरम लोहा पिलाना)	159
80. Slashed By Ferocious Iron-fanged Dogs	160
श्वभिराकृष्य भक्षणम् (कुत्तों द्वारा नोंचना)	161
81. Beaten By Snakes and Scorpions	162
नानाविधकीटदंशनम् (साँप-बिच्छू का डँसना)	163
82. Cooked in Fire like Rice-dumplings	164
अग्नौ कूष्माण्डवत् पाकः (अग्नि में कद्दू की तरह पकाना)	165
83. Giving Advice to Fools is Useless	166
नोपदेशो हि मूर्खाणाम् (मूर्खों को शिक्षा देना निरर्थक)	167
84. Terrifying Stories of Hell	168
निरयस्य तापकारिण्यः वार्ता (नरक की तपाने वाली वार्तायें)	169
85. Similarity between Desire and Avici Hell	170
तृष्णा-अवीचिनरकयोः साम्यम् (तृष्णा एवं अवीचिनरक में समानता)	171
86. Comparison Between Earthly and Hell Suffering	172
त्रिशतकुन्तनिर्भेदोऽपि नारकीयदुःखतुलां नार्हति (तीन सौ भालों की मार भी नारकीय दुःख से कम)	173
87. Removal of Non-virtue Essential to End Suffering	174
दुराचारेण नारकजीवने वृद्धिः (नारकीय जीवन में दुराचार से वृद्धि)	175
88. Wrongdoing is the Seed of Non-virtue--	176
दुराचारोऽकुशलानां फलानां बीजम् (अकुशलविपाक का बीज दुराचार)	177
89. The Sufferings of Animals	178
तिर्यग्योनिषु जायमानदुःखानां वर्णनम् (तिर्यग्योनि-दुःखवर्णन)	179

90. Specific Types of Animal Sufferings
पशूनां वधेऽन्येऽपि हेतवः (पशुवध के अन्य कारण) 186
91. The Suffering of Hungry Ghosts (Pretas)
प्रेतलोके जायमानानां दुःखानां वर्णनम् (प्रेतलोक-दुःखवर्णन) 187
92. Torture of Needle-mouthed and Hill-bellied
सूचीमुखस्य पर्वतोदरस्य तापः (सूचीमुख और पर्वतोदर का ताप) 187
93. Some More Terrifying Tortures
अपराश्च घोरतमाः यातनाः (और भी घेरतम यातनाएँ) 188
94. In the Absence of Filth, Blood, etc., Mutual Killings of Pretas
मलरक्ताद्यभावे प्रेतानां परस्परहननम् (मलादि के अभाव में
प्रेतों की परस्पर हत्या) 188
95. Contrary and Horrifying Effect of Preta's Look
प्रेतानां दृष्टिपातस्य प्रतिकूलो घेरश्च प्रभावः (प्रेतों के
दृष्टिपात का उल्टा और भयंकर प्रभाव) 189
96. Non-ending Sorrows of the Preta-s
प्रेतानां दुःख-नैरन्तर्यम् (प्रेतों के दुःख की निरन्तरता) 190
96. Only Avarice and Greed the Cause of Sorrows
मात्सर्य-लोभावेव दुःखभोगकारणम् (मात्सर्य और लोभ दुःखोत्पादक) 191
98. The Sufferings of Deities
निर्वाणेषुभिः स्वर्गसुखमपि नाभिवाञ्छनीयम् (साधक के
लिए स्वर्गसुख त्याज्य) 192
99. Signs of Downfall from Heaven
स्वर्गतश्च्युते चिह्नानि (स्वर्गच्युति के पूर्व चिह्न) 193
100. Life on Earth is Also Painfull
पृथ्वीतलवासोऽपि दुःखदः (पृथ्वी पर वास भी दुःखद) 194
101. Animal and Preta Life is Also Painfull
तिर्यग्योनिः प्रेतयोनिश्च दुःखदैव (पशु एवं प्रेतयोनि भी दुःखद) 195
102. The Sufferings of Demons (Asuras)
आसुरी योनिरपि कष्टदा (आसुरी योनि भी कष्टप्रद) 196
103. To Show the Understanding of Samśāra as Unfortunate
अपुनर्जन्मने यतनीयम् (अपुनर्जन्म के लिए प्रयास) 197

104. Illustration of the Virtues Making <i>Nirvāṇa</i>	
An Object to Be Attained	208
एतस्मिन् प्रयासे एका उपमा (इस प्रयास पर एक दृष्टान्त)	209
105. To Strive to Attain <i>Nirvāṇa</i>	210
निर्वाणं प्रापणीयम् (निर्वाण ही प्राप्त करने योग्य)	211
106. The Seven Limbs of Enlightenment	212
बोध्यङ्गसप्तकम् (सात बोध्यङ्ग)	213
107. The Union of <i>Śamathā</i> and <i>Vipaśyanā</i>	214
शमथविपश्यनायोरविनाभावित्वम् (शमथ और विपस्सना का अविनाभावित्व)	215
108. Unexpounded Views	216
दशाव्याकृता लोकाः (दश अव्याकृत लौकिक प्रश्न)	217
109. Dependent Origination	218
प्रतीत्यसमुत्पादः (प्रतीत्यसमुत्पाद)	219
110. Grasping is the Cause of Becoming	220
उपादानाद् भवो जायते (उपादान से भव की प्राप्ति)	221
111. With the Destruction of Birth Sorrows Get Annihilated	222
जाति-निरोधात् दुःखनिरोधः (जन्म के नाश से दुःख का नाश)	223
112. Praise to Dependent Origination	224
प्रतीत्यसमुत्पादमाहात्म्यम् (प्रतीत्यसमुत्पादसाधना की महिमा)	225
113. The Noble Eightfold Path	226
आर्योऽष्टाङ्गिको मार्गः (आर्य अष्टाङ्गिक मार्ग)	227
114. The Birth is Suffering	228
जातिर्दुःखा (जन्म दुःखमय है)	229
115. The Four <i>Ārya</i> Truths	230
आर्यसत्यचतुष्टयम् (चार आर्य सत्य)	231
116. Some Words of Encouragement	232
सद्धर्मसाक्षात्कारमाहात्म्यम् (सद्धर्म के साक्षात्कार की महिमा)	233
117. Counsel in Brief	234
त्वदीया कल्याणकामना (हितकामना)	235

118. Gravity of Buddha's Teachings देशनायाः गम्भीर्यम् (बुद्धोक्त उपदेशों की गम्भीरता)	236
119. Counsel to Practise the Path of the <i>Mahāyāna</i> परिणामना (अपने और दूसरों के सत्कर्मों का अनुमोदन)	237
120. The Ideal of <i>Ārya Avalokiteśvara</i> आर्यावलोकितेश्वरवदाचरणीयम् (आर्य अवलोकितेश्वर का आदर्श)	239
121. Behaviour In Last Life as <i>Amitābha</i> आर्यामिताभवदाचरणीयम् (अन्तिम जन्म के अमिताभतुल्य आचरण)	240
122. Result of the Path जगद्धिताय चारिका करणीया (जगत् के हित के लिए चारिका)	241
123. Enabling Beings to Cross the River of Erroneous Views and Reach the Land of Deliverance प्राणिनो निर्भयान् कृत्वा निर्वाणं प्रापणीयम् (प्राणियों को निर्भय करके ही निर्वाण के लिए प्रयास)	242
124. Conclusion निगमनम् (उपसंहार)	243
GLOSSARY	244
	248
	249
	250-280